M.A sem-4

CC-13

दर्शनशास्त्र के अनुसार धार्मिक कट्टरवाद

दर्शनशास्त्र (Philosophy) के दृष्टिकोण से धार्मिक कट्टरवाद केवल धार्मिक आस्था का प्रश्न नहीं है, बल्कि ज्ञान, सत्य, नैतिकता और सत्ता (authority) से जुड़ा एक गहरा वैचारिक विषय है। दार्शनिक इस बात की पड़ताल करते हैं कि मनुष्य सत्य को कैसे जानता है, विश्वास और तर्क का संबंध क्या है, और जब कोई विचारधारा स्वयं को अंतिम सत्य घोषित कर देती है तो उसके सामाजिक और नैतिक परिणाम क्या होते हैं।

1. ज्ञानमीमांसा (Epistemology) के संदर्भ में

ज्ञानमीमांसा यह अध्ययन करती है कि "ज्ञान क्या है?" और "हम सत्य को कैसे पहचानते हैं?"

धार्मिक कट्टरवाद सामान्यतः यह मानता है कि पवित्र ग्रंथों में दिया गया सत्य पूर्ण और अपरिवर्तनीय है। इस दृष्टिकोण में तर्क, अनुभव या वैज्ञानिक खोज की भूमिका सीमित हो जाती है।

दार्शनिक जैसे Immanuel Kant ने तर्क और विवेक (reason) को ज्ञान का आधार माना। उनके अनुसार मनुष्य को स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता का उपयोग करना चाहिए। वहीं Karl Popper ने कहा कि किसी भी विचार को वैज्ञानिक या युक्तिसंगत तभी माना जा सकता है जब वह आलोचना और परीक्षण के लिए खुला हो। कट्टरवाद इस खुली आलोचना को अक्सर अस्वीकार करता है।

2. नैतिक दर्शन (Ethics) के संदर्भ में

नैतिक दर्शन यह पूछता है कि सही और गलत का आधार क्या है।

कट्टरवादी दृष्टिकोण में नैतिकता का स्रोत ईश्वरीय आदेश (Divine Command) होता है। अर्थात् जो कुछ धर्मग्रंथ में लिखा है वही नैतिक है।

इसके विपरीत, John Stuart Mill जैसे दार्शनिकों ने उपयोगितावाद (Utilitarianism) का सिद्धांत दिया, जिसमें नैतिकता का आधार मानव कल्याण और सुख है। इस दृष्टि से यदि कोई धार्मिक नियम मानव स्वतंत्रता या सुख को बाधित करता है, तो उसकी आलोचना की जा सकती है।

3. अस्तित्ववाद (Existentialism) के दृष्टिकोण से

अस्तित्ववादी दार्शनिकों जैसे Jean-Paul Sartre का मानना था कि मनुष्य स्वतंत्र है और अपने चुनावों के लिए स्वयं जिम्मेदार है। धार्मिक कट्टरवाद में व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित हो सकती है, क्योंकि उसे पूर्वनिर्धारित नियमों का पालन करना पड़ता है। अस्तित्ववाद इस व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जिम्मेदारी पर बल देता है।

4. बहुलतावाद (Pluralism) और सहिष्णुता

आधुनिक राजनीतिक दर्शन में बहुलतावाद (Pluralism) का विचार महत्वपूर्ण है। John Rawls ने "न्याय का सिद्धांत" (A Theory of Justice) में कहा कि विविध समाजों में विभिन्न विश्वासों के साथ शांतिपूर्वक

सह-अस्तित्व आवश्यक है। धार्मिक कट्टरवाद बहुलतावाद को चुनौती देता है क्योंकि वह अपने विचार को ही अंतिम सत्य मानता है।

5. सत्ता और विचारधारा

कुछ दार्शनिक, विशेषकर Michel Foucault, ने यह तर्क दिया कि ज्ञान और सत्ता (power) का गहरा संबंध है। धार्मिक कट्टरवाद में धर्म का उपयोग सामाजिक और राजनीतिक नियंत्रण के साधन के रूप में भी किया जा सकता है।

निष्कर्ष

दर्शनशास्त्र के अनुसार धार्मिक कट्टरवाद एक ऐसा दृष्टिकोण है जो सत्य और नैतिकता को स्थिर, अंतिम और प्रश्नातीत मानता है। इसके विपरीत, अधिकांश आधुनिक दार्शनिक परंपराएँ तर्क, संवाद, आलोचना और सहिष्णुता पर बल देती हैं। इसलिए दार्शनिक दृष्टि से कट्टरवाद और आलोचनात्मक विवेक (critical reason) के बीच एक मूलभूत तनाव (tension) देखा जाता है।